रिसाला नम्बर : 20

Pul Siraat Ki Dahshat (Hindi)

पुल सिरात़ की दहशत

- पुल सिरात़ पन्दरह हज़ार साल की राह है 6
- पुल सिरात़ से ब आसानी कौन गुज़र सकेगा ? 6
- पुल सिरात़ से गुज़रने वालों के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ 7
- फ़ोन की म्यूज़ीकल ट्यून 18
- समुन्दरी ज़ल्ज़ले की तबाह कारियां 27

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अर्ज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

पुल सिरात़ की दहशत

येह रिसाला (**पुल सिरात़ की दहशत**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. **98987 32611** • Email : **hindibook@dawateislamihind.net**

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ؕ

पुल सिरात़ की दहशत [1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (35 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता हुवा मह़सूस फ़रमाएंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है, जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर 80 बार दुरूदे पाक पढ़े उस के 80 साल के गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे । (اَلْجامِعُ الصَّغِیر ص۳۲۰ حدیث۵۱۹۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पुल सिरात़ की दहशत (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَفِیْظ की एक कनीज़ ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की **:** मैं ने ख़्वाब में देखा कि जहन्नम को दहकाया (या'नी भड़काया) गया है और उस के ऊपर **पुल सिरात़** रख दिया गया है । इतने में **उ-मवी ख़ु-लफ़ा** को लाया गया । सब से पहले ख़लीफ़ा **अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान** को हुक्म हुवा कि **पुल सिरात़** से गुज़रो ! वोह **पुल सिरात़** पर चढ़ा, मगर आह ! देखते ही

---

1 **:** येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने आ़शिक़ाने रसूल की म-दनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तीन दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (1,2,3 मुहर्रमुल ह़राम 1426 सि.हि. फ़रवरी 2005 ई. बाबुल इस्लाम सिन्ध) में फ़रमाया । मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

देखते दोज़ख़ में गिर पड़ा। फिर उस के बेटे **वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक** को लाया गया, वोह भी दोज़ख़ में जा गिरा। इस के बा'द **सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक** को ह़ाज़िर किया गया और वोह भी इसी त़रह़ दोज़ख़ में गिर गया। इन सब के बा'द या अमीरल मुअमिनीन ! आप को लाया गया, बस इतना सुनना था कि **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَفِيْظ ने ख़ौफ़ज़दा हो कर चीख़ मारी और गिर पड़े। कनीज़ ने पुकार कर कहा : या अमीरल मुअमिनीन ! सुनिये भी तो..... ख़ुदा की क़सम ! मैं ने देखा कि आप ने सलामती के साथ **पुल सिरात़** पार कर लिया। मगर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَفِيْظ **पुल सिरात़ की दहशत** से बेहोश हो चुके थे और इसी आ़लम में इधर उधर हाथ पाउं मार रहे थे। (اِحْيَاءُ الْعُلُوم ج ٤ ص ٢٣١ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

पुल सिरात़ तलवार की धार से ज़ियादा तेज़ है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! याद रहे ! ग़ैरे नबी का ख़्वाब शरीअ़त में ह़ुज्जत या'नी दलील नहीं, कनीज़ के ख़्वाब की बुन्याद पर उन ख़ु-लफ़ा को हरगिज़ हरगिज़ जहन्नमी नहीं कह सकते, **अल्लाह** पाक ही उन का ह़ाल जानता है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَفِيْظ में ख़ौफ़े ख़ुदा कूट कूट कर भरा हुवा था, सिर्फ़ ख़्वाब सुन कर **पुल सिरात़** की दहशत से बेहोश हो गए ! वाक़ेई **पुल सिरात़** का मुआ़मला बड़ा ही नाज़ुक है। पुल सिरात़ बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार की धार से ज़ियादा तेज़ है और येह जहन्नम की पुश्त पर

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

रखा हुवा होगा, ख़ुदा की क़सम ! येह सख़्त तश्वीश नाक मर्ह़ला है, हर एक को उस पर से गुज़रना पड़ेगा ।

फिर तेरा येह हंसना कैसा ? (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने एक शख़्स को देखा कि वोह हंस रहा है । फ़रमाया : ऐ जवान ! क्या तू पुल सिरात़ से गुज़र चुका है ? अ़र्ज़ की : नहीं । फिर फ़रमाया : क्या येह जानता है कि तू जन्नत में जाएगा या दोज़ख़ में ? अ़र्ज़ की : नहीं । फ़रमाया : فَمَا هٰذَا الضِّحْكُ ؟ या'नी फिर तेरा येह हंसना कैसा है ? (या'नी जब ऐसी मुश्किलात तेरे सामने हैं और तुझे अपनी नजात का भी इ़ल्म नहीं तो फिर किस ख़ुशी पर हंस रहा है ?) इस के बा'द किसी ने कभी भी उस को हंसते नहीं देखा । (اِحیاءُ العُلوم ج ٤ ص٢٢٧)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़ुश होने वाले पर ह़ैरत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "तअ़ज्जुब है उस हंसने वाले पर जिस के पीछे जहन्नम है और ह़ैरत है उस ख़ुशी मनाने वाले पर जिस के पीछे मौत है ।" (تَنبِیهُ المُغتَرِّین ص٤١)

हर एक पुल सिरात़ से गुज़रेगा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो ग़ज़्वए बद्र व ह़ुदैबिया में ह़ाज़िर थे, اِنْ شَآءَ اللہ تَعَالٰی वोह आग में दाख़िल नहीं होंगे । मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

अल्लाह पाक ने येह नहीं फ़रमाया :

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿۷۱﴾

(پ۱۶، مریم:۷۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो, तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम ने नहीं सुना :

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿۷۲﴾

(پ۱۶، مریم:۷۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे।

(اِبن ماجه ج٤ ص٥٠٨ حديث٤٢٨١)

मुजरिम जहन्नम में गिर पड़ेंगे

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि हर एक को दोज़ख़ से गुज़रना होगा। ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले मुसल्मान बचा लिये जाएंगे और मुजरिम व ज़ालिम लोग जहन्नम में गिर पड़ेंगे। वाक़ेई इन्तिहाई दुश्वार मुआ़मला है, हाए ! हाए ! फिर भी हम ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार नहीं होते।

दिल हाए ! गुनाहों से बेज़ार नहीं होता
मग़लूब शहा ! नफ़्से बदकार नहीं होता
येह सांस की माला अब, बस टूटने वाली है
ग़फ़्लत से मगर दिल क्यूं बेदार नहीं होता
गो लाख करूं कोशिश, इस्लाह़ नहीं होती
पाकीज़ा गुनाहों से किरदार नहीं होता
ऐ रब के ह़बीब आओ ! ऐ मेरे त़बीब आओ !
अच्छा येह गुनाहों का बीमार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 163)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

सह़ाबी का रोना (ह़िकायत)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! पुल सिरात़ से गुज़रने का मुआ़मला आसान नहीं, हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن इस तअ़ल्लुक़ से बेह़द फ़िक्र मन्द रहा करते थे। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक बार रोते देख कर उन की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ की : आप को किस बात ने रुलाया है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे **अल्लाह** पाक का येह फ़रमान याद आ गया وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो। (پ۱۶، مریم:۷۱)) यूं येह तो जान लिया कि मैं ने उस में दाख़िल होना है लेकिन येह नहीं जानता कि मैं उस से नजात ह़ासिल कर सकूंगा या नहीं।

(اَلْمُسْتَدْرَك ج۵ص۸۱۰حدیث ۸۷۸۶،اَلتَّخویف مِنَ النَّار ص ۲۴۴)

"وَارِدُهَا" से मुराद

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان **ख़ौफ़े ख़ुदा** मरह़बा ! **सूरए मरयम** की आयत नम्बर 71 में लफ़्ज़, "**وَارِدُهَا**" (या'नी दोज़ख़ से गुज़रने) के बारे में ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا और सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा के ख़याल में बात येह थी कि क़ुरआने करीम के इन अल्फ़ाज़ में "**وَارِدُهَا**" के मा'ना "**دَاخِلُهَا**" (या'नी दोज़ख़ में दाख़िल होने) के हैं।[1] याद रहे ! इस आयते करीमा وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो।) के तह़त "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में है : (ह़ज़रते) ह़सन व

1: مرقاة المفاتیح ج۱۰ص۵۹۹ تحت الحدیث ۶۲۲۷،اَلتَّخویف مِنَ النَّار ص ۲۴۴ ، البدور السّافرة ص ۳۳۸

www.dawateislami.net

क़तादा (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى वग़ैरा) से मरवी है कि दोज़ख़ पर गुज़रने से पुल सिरात़ पर गुज़रना मुराद है जो दोज़ख़ पर है । (तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 579)

काश के मेरी मां ने ही नहीं जना होता

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मैसरह अम्र बिन शुरह़बील عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَلِيْل एक बार बिछोने पर आराम के लिये तशरीफ़ ले गए तो बे क़रार हो कर फ़रमाने लगे : काश ! मेरी मां ने मुझ को जना ही न होता । उन की ज़ौजए मोह़तरमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने अ़र्ज़ की : आप ऐसा क्यूं फ़रमा रहे हैं ? फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** करीम ने जहन्नम पर गुज़रने की ख़बर दी है लेकिन येह ख़बर नहीं कि हम उस से निकलेंगे या नहीं । (اَلْبُدورُ السّافِرة ص٣٤٣)

पुल सिरात़ पन्दरह हज़ार साल की राह है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक हम पर रह़्म फ़रमाए, पुल सिरात़ का सफ़र निहायत ही त़वील (या'नी लम्बा) है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ुज़ैल बिन इयाज़** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है : पुल सिरात़ का सफ़र पन्दरह हज़ार साल की राह है, पांच हज़ार साल ऊपर चढ़ने के, **पांच हज़ार साल** नीचे उतरने के और पांच हज़ार साल बराबर के । पुल सिरात़ बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार की धार से ज़ियादा तेज़ है और वोह जहन्नम की पुश्त पर बना हुवा है इस पर से वोह गुज़र सकेगा जो ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइ़स कमज़ोर होगा । (اَلْبُدورُ السّافِرة ص٣٣٤)

पुल सिरात़ से ब आसानी कौन गुज़र सकेगा ?

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! तसव्वुर कीजिये ! उस वक़्त क्या गुज़र रही होगी जब मैदाने क़ियामत में सूरज एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, लोग नंगे बदन और नंगे पाउं ज़मीन पर खड़े होंगे, भेजे खौल

रहे होंगे, कलेजे फट गए होंगे, दिल उबल कर गले में आ गए होंगे, ऐसे ख़ौफ़नाक ह़ालात में पुल सिरात़ से गुज़रने का मर्ह़ला दरपेश होगा । इस से गुज़रने के लिये दुन्यवी ए'तिबार से त़ाक़त वर, कड़्यल नौ जवान या पहलवान, तेज़ रफ़्तार, ख़लाबाज़ या कराटे बाज़, और हट्टे कट्टे मुस्टन्डे होने की ह़ाजत नहीं बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ुज़ैल बिन इयाज़** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इर्शाद के मुत़ाबिक़ ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब कमज़ोर रहने वाले पुल सिरात़ को ब आसानी पार कर लेंगे ।

पुल सिरात़ से गुज़रने वालों के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है, **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जहन्नम पर एक पुल है जो बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार से ज़ियादा तेज़ है, उस पर लोहे के कुन्डे और कांटे हैं जो कि उसे पकड़ेंगे जिसे **अल्लाह** पाक चाहेगा । लोग उस पर गुज़रेंगे, बा'ज़ पलक झपकने की त़रह़, बा'ज़ बिजली की त़रह़, बा'ज़ हवा की त़रह़, बा'ज़ बेहतरीन और अच्छे घोड़ों और ऊंटों की त़रह़ (गुज़रेंगे) और फ़िरिश्ते कहते होंगे : ''رَبِّ سَلِّمْ، رَبِّ سَلِّمْ'' (या'नी ऐ परवर दगार सलामती से गुज़ार, ऐ परवर दगार सलामती से गुज़ार) बा'ज़ मुसल्मान नजात पाएंगे, बा'ज़ ज़ख़्मी होंगे, बा'ज़ औंधे होंगे, बा'ज़ मुंह के बल जहन्नम में गिर पड़ेंगे । (مُسندِ اِمام احمد ج۹ ص۴۱۵ حدیث۲۴۸۴۷)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं : सिरात़ ह़क़ है । येह एक पुल है कि पुश्ते जहन्नम पर नस्ब (या'नी क़ाइम) किया जाएगा । बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार से ज़ियादा तेज़ होगा ।

जन्नत में जाने का येही रास्ता है। सब से पहले नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुज़र फ़रमाएंगे, फिर और अम्बिया व मुरसलीन, फिर येह उम्मत फिर और उम्मतें गुज़रेंगी और ह़स्बे इख़्तिलाफ़े आ'माल पुल सिरात़ पर लोग मुख़्तलिफ़ त़रह़ से गुज़रेंगे, बा'ज़ तो ऐसे तेज़ी के साथ गुज़रेंगे जैसे बिजली का कौंदा कि अभी चमका और अभी ग़ाइब हो गया और बा'ज़ तेज़ हवा की त़रह़, कोई ऐसे जैसे परिन्द उड़ता है और बा'ज़ जैसे घोड़ा दौड़ता है और बा'ज़ जैसे आदमी दौड़ता है, यहां तक कि बा'ज़ शख़्स सुरीन पर घिसटते हुए और कोई च्यूंटी की चाल जाएगा और पुल सिरात़ के दोनों जानिब बड़े बड़े आंकड़े (**अल्लाह** पाक ही जाने कि वोह कितने बड़े होंगे) लटक्ते होंगे, जिस शख़्स के बारे में हुक्म होगा उसे पकड़ लेंगे, मगर बा'ज़ तो ज़ख़्मी हो कर नजात पा जाएंगे और बा'ज़ को जहन्नम में गिरा देंगे और येह हलाक हुवा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 147, 148)

या इलाही जब चलूं तारीक राहे पुल सिरात़ आफ़्ताबे हाशिमी नूरुल हुदा का साथ हो
या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े رَبِّ سَلِّم कहने वाले ग़मज़ुदा[1] का साथ हो
या इलाही ! नामए आ'माल जब खुलने लगें
ऐबपोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़त़ा का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 133)

आख़िरत में तंगी का एक सबब

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जहन्नम की आग तारीक होगी और पुल सिरात़ अंधेरे में डूबा हुवा होगा। फ़क़त़ वोही काम्याब होगा जिस पर

1 : ग़मज़दा के मा'ना : ग़मगीन और ''ग़मज़ुदा'' के मा'ना : दूसरों का ग़म दूर करने वाला।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

रब्बुल अकरम का फ़ज़्लो करम होगा। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि जिस पर दुन्या में तंगी हुई उस पर आख़िरत में कुशादगी होगी और जिस पर दुन्या में कुशादगी हुई उस पर आख़िरत में तंगी होगी।

(حِلْیَۃُ الْاولیاء ج۱۰ ص۲۰۷ حدیث۱۴۹۵۸ماخوذاً)

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन अबू हिलाल رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि मेरे पास येह बात पहुंची है कि क़ियामत के रोज़ पुल सिरात़ बा'ज़ लोगों पर बाल से भी बारीक होगा और बा'ज़ के लिये घर और वसीअ़ वादी की त़रह़ होगा। (شُعَبُ الْاِیمان ج۱ ص۳۳۳)

अहले सिरात़ रूहे़ अमीं को ख़बर करें जाती है उम्मते न-बवी फ़र्श पर करें

सरकार ! हम कमीनों के अत़्वार पर न जाएं आक़ा हु़ज़ूर ! अपने करम पर नज़र करें

माल ज़ियादा तो वबाल भी ज़ियादा

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! दस्तूर है कि जितना माल ज़ियादा उतना ही वबाल भी ज़ियादा। सफ़र का भी उसूल है कि बस या रेलगाड़ी वग़ैरा में जिस के पास ज़ियादा सामान होता है वोह उतना ही परेशान होता है। नीज़ जो लोग हवाई जहाज़ के ज़रीए एक मुल्क से दूसरे मुल्क का सफ़र करते हैं उन को तजरिबा होगा कि ज़ियादा सामान वाले कस्टम वग़ैरा में किस क़दर परेशान होते हैं ! इसी त़रह़ जिस के पास दुन्या के माल का बोझ कम होगा उसे आख़िरत में आसानी रहेगी। चुनान्चे

''भारी बोझ'' की ता'रीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि **अल्लाह** पाक के मह़बूब, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ कर तशरीफ़ लाए और उन से फ़रमाया : **ऐ अबू ज़र !** क्या

तुम्हें ख़बर है कि हमारे आगे एक सख़्त घाटी है, उस पर सिर्फ़ हलके बोझ वाले गुज़र सकेंगे ? एक साहिब ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं भारी बोझ वालों में से हूं या हलके बोझ वालों में से ? फ़रमाया : क्या तेरे पास आज का खाना है ? अ़र्ज़ की : जी हां। फ़रमाया : कल का खाना है ? अ़र्ज़ की : जी हां। फिर फ़रमाया : परसों का खाना है ? अ़र्ज़ की : जी नहीं ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अगर तेरे पास तीन दिनों का खाना होता तो तू भारी बोझ वालों से होता।** (مُعْجَم اَوْسَط ج۳ ص۳٤۸ حدیث٤۸۰۹)

रह़मतुल्लिल आ़लमीं ! तेरी दुहाई दब गया
अब तो मौला बे त़रह़[1] सर पर गुनह का बार है

बोझ ही बोझ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे यहां तीन दिन के खाने के ज़ख़ीरे की तो बात ही कहां है, महज़ ह़िर्स के बाइस त़रह़ त़रह़ की ग़िज़ाओं से फ़्रिज भरा रहता है और बिला ज़रूरत हर चीज़ का अम्बार लगा रहता है। आह ! हम ह़रीसों का क्या बनेगा ! दौलत की कसरत का बोझ, मज़ीद माल बढ़ाए चले जाने की हवस का बोझ, कई कई दुकानों और कारख़ानों का बोझ, बल्कि त़रह़ त़रह़ के गुनाहों का भी बोझ म-सलन सूद व रिश्वत का बोझ, धोके बाज़ियों का बोझ, दूसरों का माले नाह़क़ दबा लेने का बोझ हाए ! हाए ! सरों पर अब तो बोझ और **बोझ ही बोझ** है, आह ! इस क़दर बोझ के होते हुए पुल सिरात़ से गुज़रने की क्या सूरत होगी !

बोझ है सर पर कोहे गुनह का आप ही का है मुझ को सहारा
मेरी मदद हो शाफ़ेए महशर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

1 : बे त़रह़ : या'नी बेह़द।

मैं अगर जहन्नम में जा गिरा तो !

आ़शिक़ाने रसूल की म-दनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मक-त-बतुल मदीना की किताब, ''**आंसूओं का दरिया**'' (300 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 77 से शुरूअ़ होने वाली त़वील ह़िकायत का बा'ज़ ह़िस्सा सुनिये : (मश्हूर ताबेई़ बुज़ुर्ग) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی लोगों को वा'ज़ो नसीह़त करने बैठे तो लोग उन के क़रीब आने के लिये एक दूसरे को धकेलने लगे, इस पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : ऐ मेरे भाइयो ! आज तुम मेरा क़ुर्ब पाने के लिये एक दूसरे को धक्के दे रहे हो, कल क़ियामत में तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब परहेज़ गारों की मजालिस क़रीब होंगी जब कि गुनाहगारों की मजालिस को दूर कर दिया जाएगा, जब कम बोझ वालों (या'नी नेक लोगों) से कहा जाएगा कि तुम पुल सिरात़ उ़बूर कर लो और ज़ियादा बोझ वालों (या'नी गुनाहगारों) से कहा जाएगा कि तुम जहन्नम में गिर जाओ । आह ! मैं नहीं जानता कि मैं ज़ियादा बोझ वालों के साथ जहन्नम में गिर पड़ूंगा या थोड़े बोझ वालों के साथ पुल सिरात़ पार कर जाऊंगा । फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रोने लगे यहां तक कि आप पर ग़शी त़ारी हो गई । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़रीब बैठे हुए लोग भी रोने लगे । फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और पुकार कर फ़रमाया : ''ऐ भाइयो ! क्या तुम जहन्नम के ख़ौफ़ से नहीं रो रहे ? सुन लो कि जो शख़्स जहन्नम के ख़ौफ़ से रोता है **अल्लाह** पाक उसे उस दिन जहन्नम से आज़ाद फ़रमाएगा जिस दिन मख़्लूक़ को ज़न्जीरों और बेड़ियों से खींचा जा रहा होगा ।''

(بَحرُ الدّموع ص٥٣)

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कीजिये

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अपने गुनाहों पर नादिम हो कर सच्ची तौबा कर के **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमाइये और **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये। ''म-दनी इन्आ़मात'' का आ़मिल बनने का अह्सन त़रीक़ा येही है कि रोज़ाना रिसाला पुर किया जाए। जो ''म-दनी इन्आ़मात'' का रिसाला रोज़ाना भर नहीं पाते वोह कम अज़ कम 25 सेकन्ड के लिये देख ही लिया करें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी न कभी भरने का जज़्बा भी मिल ही जाएगा। और इस की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आख़िरत की तय्यारी और क़ब्रो ह़श्र की रोशनी और **पुल सिरात़** पर नूर के हुसूल की तड़प पैदा होगी।

नूर वाले मुसल्मान

अल्लाह पाक का जिस पर करम होगा उस को ऐसा **नूर** अ़त़ा होगा कि उस का बेड़ा पार हो जाएगा। चुनान्चे पारह 27 **सूरतुल ह़दीद** की 12वीं आयते करीमा में **अल्लाहु** नूरुस्समावाति वल अर्द़ का इर्शादे नूरबार है :

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ (پ۲۷، الحدید:۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन तुम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औ़रतों को देखोगे कि उन का नूर उन के आगे और उन के दहने दौड़ता है।

नूरे ईमान की शान

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की ख़ास इनायत से जो ख़ुश क़िस्मत मुसल्मान नूर से मा'मूर हो कर जगमग जगमग करता झूमता हुवा पुल सिरात़ से गुज़रेगा उस की शाने अ़ज़मत निशान का रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने रोशन बयान से अन्दाज़ा लगाइये : "दोज़ख़ मोमिन से कहेगी, ऐ मोमिन ! जल्द तर गुज़र, इस लिये कि तेरे नूर ने मेरी आग बुझा दी।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۱ ص۳۳۹ حدیث۳۷۵)

आक़ा का गदा हूं ऐ जहन्नम ! तू भी सुन ले
वोह कैसे जले जो कि ग़ुलामे म-दनी हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़श्र में नूर दिलाने वाले 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿ नमाज़ी को नूर मिलेगा

जिस ने नमाज़ों की ह़िफ़ाज़त की उस के लिये क़ियामत में **नूर** व बुरहान (या'नी दलील) और नजात होगी और जिस ने नमाज़ की ह़िफ़ाज़त न की तो उस के लिये न नूर होगा और न बुरहान और न नजात और वोह (या'नी बे नमाज़) क़ियामत में क़ारून व फ़िरऔ़न व हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ उठाया जाएगा। (مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۲ ص۵۷٤ حدیث٦۵۸۷)

﴾2﴿ अंधेरे में मस्जिद को जाने की फ़ज़ीलत

अंधेरों में मसाजिद की त़रफ़ जाने वालों को क़ियामत में **नूरे ताम** (या'नी मुकम्मल नूर) की ख़ुश ख़बरी दो। (ابوداؤد ج۱ ص۲۳۲ حدیث۵٦۱)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

﴾3﴿ मुश्किल कुशाई की फ़ज़ीलत

जिस ने किसी मुसल्मान भाई की मुश्किल आसान की **अल्लाह** पाक क़ियामत में पुल सिरात़ पर उस के लिये **नूर** के दो शो'बे बनाएगा, उन की रोशनी से एक आ़लम रोशन होगा जिन की गिनती रब्बुल इ़ज़्ज़त ख़ुद ही जानता है। (مُعجَم اَوسَط ج٣ ص٢٥٤ حديث٤٥٠٤)

﴾4﴿ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه 100 बार पढ़ने की फ़ज़ीलत

जो सो बार لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه पढ़े उसे **अल्लाह** पाक क़ियामत में इस त़रह़ उठाएगा कि उस का चेहरा चौदहवीं रात के **चांद** की त़रह़ चमक रहा होगा।

(مَجْمَعُ الزَّوائِد ج١٠ ص٩٦ حديث١٦٨٣٠)

﴾5﴿ बाज़ार में ज़िक्र की फ़ज़ीलत

बाज़ार में **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करने वाले के लिये हर बाल के बदले में क़ियामत में **नूर** होगा। (شُعَبُ الْاِيمان ج١ ص٤١٢ حديث٥٦٧)

जन्नत में घर बनवाइये

سُبْحٰنَ اللّٰه ! बाज़ार की ग़फ़्लत भरी रौनक़ों से जब भी गुज़रना पड़ जाए तो निगाहों की ह़िफ़ाज़त के साथ साथ ज़िक्रो दुरूद का विर्द शुरूअ़ कर दीजिये नीज़ बाज़ार में दाख़िल होने के वक़्त येह दुआ़ पढ़ लीजिये :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ط لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ ط وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط

ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त येह दुआ़ पढ़ेगा, **अल्लाह** पाक उस के लिये एक लाख नेकी

लिखेगा और एक लाख गुनाह मिटा देगा और एक लाख दरजे बुलन्द फ़रमाएगा और उस के लिये एक घर जन्नत में बनाएगा।'' (ترمذی ج۵ ص۲۷۱ حدیث۳۴۴)

कि है रब्बِ سلِّم सदाए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! क़ब्रो ह़श्र व पुल सिरात़ पर नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हम गुलामाने मुस्त़फ़ा को नूर ही नूर मिलेगा कि बरोज़े मह़शर हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने गुलामों की फ़िक्र लाह़िक़ होगी, इस दुआ : ''رَبِّ سَلِّم ، رَبِّ سَلِّم'' (या'नी ''परवर दगार सलामती से गुज़ार, परवर दगार सलामती से गुज़ार'') की तक्रार फ़रमा रहे होंगे। आ़शिके़ माहे रिसालत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं :

कि है رَبِّ سَلِّم सदाए मुह़म्मद (صلّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم)
रज़ा पुल से अब वज्द करते गुज़रिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नूर से मह़रूम लोग

हां जो बद नसीब नमाज़ नहीं पढ़ेगा, दाढ़ी मुंडवाएगा या एक मुठ्ठी से घटाएगा, मां बाप को सताएगा, औलाद को शरीअ़त की पाबन्दी से रोक कर मॉडर्न बनाएगा, बीवी और बालिग़ा बच्चियों को बे पर्दा फिराएगा, फ़िल्मों डिरामों, गाने बाजों, ह़राम रोज़ियों, सूदी तिजारतों, धोके बाज़ियों, गन्दी गालियों, ग़ीबतों, चुग़लियों, ऐ़ब दरियों, बद निगाहियों, बिला इजाज़ते शर-ई़ मुसल्मानों की दिल आज़ारियों, बे नमाज़ियों और फ़ेशन परस्त बुरे दोस्तों की नीज़ शह्वत के बा वुजूद अम्रदों या'नी ख़ूब सूरत लड़कों की सोह़बतों वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों से बाज़ नहीं आएगा उस

के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिया है। अगर **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे **ह़बीब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ हो गए और गुनाहों के सबब ईमान बरबाद हो गया तो यक़ीनन ना क़ाबिले बरदाश्त दाइमी अ़ज़ाबों का सामना होगा और पुल सिरात़ पर नूर भी नहीं मिलेगा। चुनान्चे

तेरे लिये कोई नूर नहीं !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه "अज़्ज़ोह्द" में नक़्ल करते हैं : "बेशक तुम **अल्लाह** पाक के यहां अपने नामों और निशानियों और अपनी सर-गोशियों और मजलिसों या'नी बैठकों और सोह़बतों समेत लिखे हुए हो। जब क़ियामत का दिन आएगा तो पुकार पड़ेगी : ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां येह तेरा नूर है और ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां **तेरे लिये कोई नूर नहीं।**" **(الزهد ص٤٦٥رقم١٣٢١)**

निगाहे नूर के त़लब गार मह़रूम भिकारी

मुनाफ़िक़ीन बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएंगे कि उन के पास ईमान का **नूर** नहीं होगा, ख़ुश नसीब ईमान वालों का **नूर** देख कर उन को ह़सरत बालाए ह़सरत होगी और उन से **नूर** की भीक मांगेंगे मगर मह़रूमे **नूर** ही रहेंगे। चुनान्चे पारह 27 **सूरतुल ह़दीद** की तेरहवीं आयते करीमा में **अल्लाह** पाक का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ج (پ٢٧، الحديد:١٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें मुसल्मानों से कहेंगे कि हमें एक निगाह देखो हम तुम्हारे नूर से कुछ ह़िस्सा लें।

ईमान पर ख़ातिमे की गारन्टी किसी के पास नहीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! नजात ईमान पर ख़ातिमे के साथ मश्रूत़ है, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْم - या'नी "आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है।" (بُخاری ج٤ ص٢٧٤ حدیث٦٦٠٧) आह ! हम में से किसी के पास भी येह गारन्टी नहीं कि उस का ख़ातिमा ईमान ही पर होगा, **अल्लाह पाक की ख़ुफ़्या तदबीर** हमारे बारे में क्या है यक़ीनन इस से हम ना वाक़िफ़ हैं और येही सब से बड़ी ख़ौफ़ की बात है। बुरे ख़ातिमे के डर से बड़े बड़े औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ख़ौफ़ज़दा रहते थे। बराहे करम ! इस की मज़ीद मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना का जारी कर्दा "**अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर" नामी बयान की केसिट सुनिये اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ आप ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठेंगे नीज़ "बुरे ख़ातिमे के अस्बाब" नामी 33 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल मुख़्तसर सा रिसाला हदिय्यतन ह़ासिल कर के ज़रूर पढ़ लीजिये अगर दिल ज़िन्दा हुवा तो ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र के जज़्बे के तह़्त اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ आप रो पड़ेंगे। आज कल बा'ज़ लोग बात बात पर कुफ़्रिय्यात बकते हैं, कलिमाते कुफ़्र का इ़ल्म ह़ासिल करना हर आ़क़िल बालिग़ मुसल्मान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है। इस सिल्सिले में "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" नामी 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब निहायत मुफ़ीद है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

अज़ान के दौरान गुफ़्त्गू

"**बहारे शरीअ़त**" में है : **जो अज़ान के वक़्त बातों में मश्ग़ूल रहे उस पर** مَعَاذَاللہ **ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है।** (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 473) लिहाज़ा कम अज़ कम पहली अज़ान सुन कर ख़ामोश रह कर हमें जवाब दे देना चाहिये। आज कल मुसल्मानों की इस त़रफ़ तवज्जोह कम है, तमाम मुअज़्ज़िन साह़िबान को चाहिये कि वोह पहले दुरूदो सलाम पढ़ें फिर इस त़रह़ ए'लान फ़रमाएं : "आ़शिक़ाने रसूल मुतवज्जेह हों, **अल्लाह** की रिज़ा के लिये अज़ान का एह़तिराम करते हुए, गुफ़्त्गू और कामकाज रोक कर अज़ान का जवाब दीजिये और ढेरों नेकियां कमाइये।" इस के बा'द अज़ान कहें।

फ़ोन की म्यूज़ीकल ट्यून

नमाज़ के दौरान बा'ज़ लोग मोबाइल फ़ोन बन्द करना भूल जाते हैं और चूंकि मूसीक़ी सुनने जैसे ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम से बचने का एह़सास भी कम रह गया है लिहाज़ा مَعَاذَاللہ मस्जिद के अन्दर त़रह़ त़रह़ की **म्यूज़ीकल ट्यून्ज़** बजनी शुरूअ़ हो जाती हैं। अव्वल तो मूसीक़ी के मन्हूस ट्यून से फ़ोन को पाक कीजिये और अगर मूसीक़ी सुनने का गुनाह किया है तो उस से तौबा भी कीजिये और मस्जिद में सादा ट्यून वाले **मोबाइल फ़ोन** भी बन्द रखा कीजिये। इस सिल्सिले में अज़ान व इक़ामत के ए'लान का कार्ड ह़ासिल कर के आ़म कीजिये। इसी त़रह़ ख़ुत़्बे के दौरान होने वाले गुनाहों की निशान देही के लिये भी एक कार्ड मक-त-बतुल मदीना ने शाएअ़ किया है। काश ! हर ख़त़ीब

हर जुमुआ़ को क़ब्ल अज़ ख़ुत़्बा पढ़ कर सुना दिया करे। येह कार्ड ज़ियादा ता'दाद में मक-त-बतुल मदीना से ह़ासिल कर लीजिये और मस्जिद मस्जिद पहुंचाने की म-दनी तह़रीक चला दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब का अम्बार लग जाएगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक हज़ार साल के बा'द दोज़ख़ से रिहाई

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : एक शख़्स जहन्नम से **एक हज़ार साल** बा'द निकाला जाएगा, फिर फ़रमाया काश ! वोह शख़्स मैं होता। **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने येह बात इस लिये इर्शाद फ़रमाई कि जो एक हज़ार साल के बा'द निकाला जाएगा उस के बारे में येह बात यक़ीनी है कि उस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा होगा। (اِحیاءُ الْعُلوم ج٤ ص٢٣١)

40 साल तक नहीं हंसे

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने ग़-ल-बए ख़ौफ़ के सबब **एक हज़ार साल** के बा'द जहन्नम से रिहाई पाने वाले शख़्स के ईमान पर ख़ातिमा हो जाने पर रश्क करते हुए फ़रमाया था कि काश ! वोह शख़्स मैं होता। आह ! हज़ार साल तो बहुत ही बड़ी बात है, **ख़ुदा की क़सम** ! एक लम्ह़े का करोड़वां ह़िस्सा भी जहन्नम का अ़ज़ाब बरदाश्त होना मुम्किन नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के ग़-ल-बए ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का

आ़लम तो देखिये ! मन्क़ूल है आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه चालीस साल तक नहीं हंसे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बैठा हुवा देख कर यूं मा'लूम होता गोया एक सहमा हुवा क़ैदी है जिसे सज़ाए मौत सुनाने के बा'द गरदन उड़ाने के लिये लाया गया है ! और जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه गुफ़्तगू फ़रमाते तो ऐसा मह़सूस होता गोया आख़िरत नज़रों के सामने है और उस को देख देख कर उस की मन्ज़र कशी फ़रमा रहे हैं और जब ख़ामोश होते तो ऐसा लगता गोया आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आंखों के सामने आग भड़क रही है ! जब अ़र्ज़ की गई : आप इस क़दर ख़ौफ़ज़दा और मग़मूम क्यूं रहते हैं ? फ़रमाया : मुझे इस बात का ख़ौफ़ खाए जा रहा है कि अगर **अल्लाह** पाक ने मेरे बा'ज़ ना पसन्दीदा आ'माल देख कर मुझ पर ग़ज़ब फ़रमाया और फ़रमा दिया कि जा मैं तुझे नहीं बख़्शता तो मेरा क्या बनेगा ! (اِحیاءُ الْعُلوم ج٤ ص٢٣١)

गिरते पड़ते गुज़रने वाला

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल करते हैं : **अल्लाह** पाक अगलों और पिछलों को एक मा'लूम दिन या'नी बरोज़े क़ियामत एक मक़ाम पर जम्अ़ फ़रमाएगा। चालीस साल तक लोगों की आंखें ऊपर की त़रफ़ लगी रहेंगी, वोह फ़ैसले के मुन्तज़िर होंगे। मोमिनों को उन के आ'माल के मुत़ाबिक़ **नूर** अ़त़ा किया जाएगा, किसी को बड़े पहाड़ की मिस्ल **नूर** मिलेगा और किसी को खजूर के दरख़्त की मानिन्द तो किसी को इस से भी कम ह़त्ता कि उन में से आख़िरी शख़्स को पाउं के अंगूठे जितना **नूर** इनायत किया जाएगा जो कभी चमकेगा और कभी बुझ जाएगा, जब उस

का **नूर** चमकेगा तो वोह चलेगा और जब बुझ जाएगा तो अंधेरे की वज्ह से रुक जाएगा। फिर हर एक अपने अपने **नूर** के मुत़ाबिक़ पुल सिरात़ उ़बूर करेगा, कोई तो **पलक** झपक्ने में गुज़र जाएगा, कोई **बिजली** की त़रह़, कोई **बादल** की मानिन्द, कोई **सितारे** टूटने की मिस्ल, कोई **घोड़े** के दौड़ने की त़रह़ तो कोई **आदमी** के दौड़ने की त़रह़ गुज़रेगा। जिस को पाउं के अंगूठे की मिस्ल **नूर** दिया जाएगा वोह चेहरे, हाथों और पाउं के बल गुज़रेगा ह़ालत येह होगी कि एक हाथ बढ़ाएगा तो दूसरा अटक जाएगा, जब एक पाउं उलझेगा तो दूसरा पाउं खींच कर बढ़ाएगा और उस के पहलूओं तक आग पहुंच जाएगी, वोह इसी त़रह़ गिरता पड़ता बिल आख़िर पुल सिरात़ पार करने में काम्याब हो जाएगा, वहां खड़े हो कर अपने पाक परवर दगार की ह़म्द बयान करेगा, फिर उसे जन्नत के दरवाज़े के क़रीब एक कूंएं पर गुस्ल दिया जाएगा। (اِحیاء العلوم ج٥ص٢٨٦ ملخّصاً)

पुल सिरात़ आह है तलवार की भी धार से तेज़ किस त़रह़ से मैं उसे पार करूंगा या रब
मेरे मह़बूब के रब ! तेरा करम होगा तो पुल को बिजली की त़रह़ पार करूंगा या रब

मेरा क्या बनेगा !

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जिन ख़ुश बख़्तों का ईमान पर ख़ातिमा होगा वोह बिल आख़िर नजात पा जाएंगे और जिस का ईमान बरबाद हो गया और बिग़ैर तौबा व तजदीदे ईमान मर गया उस की नजात की कोई सूरत ही नहीं। हर एक को डरना ज़रूरी है कि न मा'लूम मेरा क्या बनेगा ! पुल सिरात़ जहन्नम पर बना हुवा है, और उस पर से गुज़रे बिग़ैर जन्नत में दाख़िला मुम्किन नहीं।

पुल सिरात़ से गुज़रने का लरज़ा ख़ैज़ तसव्वुर

ह़ुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : जो शख़्स इस दुन्या में सिराते मुस्तक़ीम (या'नी सीधे रस्ते) पर क़ाइम रहा वोह बरोज़े क़ियामत **पुल सिरात़** पर हलका फुलका हो कर नजात पा लेगा और जो दुन्या में इस्तिक़ामत से हट गया, ना फ़रमानियों और गुनाहों के सबब उस की पीठ भारी हुई तो पहले ही क़दम में पुल सिरात़ से फिसल कर गिर पड़ेगा। ऐ बन्दए नातुवां ! ज़रा ग़ौर तो कर जब तू पुल सिरात़ और उस की बारीकी को देखेगा तो किस क़दर घबराएगा, फिर उस के नीचे जहन्नम की होलनाक सियाही पर तेरी नज़र पड़ेगी, नीचे से जहन्नम का जोशो ख़रोश सुनाई देगा, आग के बुलन्द शो'लों की चीख़ पुकार तेरे कानों से टकराएगी, तू सोच तो सही ! उस वक़्त तुझ पर किस क़दर दहशत त़ारी होगी। याद रख ! तेरा दिल चाहे कितना ही बे क़रार व बेकल हो, क़दम फिसल रहे हों और पीठ पर इस क़दर बोझ हो कि इतना बोझ उठा कर हमवार ज़मीन पर चलना भी तेरे लिये दुश्वार हो, तू लाख कमज़ोरी की ह़ालत में हो मगर तुझे पुल सिरात़ पर चलना ही पड़ेगा, तू तसव्वुर तो कर कि बाल से बारीक और तलवार की धार से तेज़ पुल सिरात़ पर न चाहते हुए भी जब तू पहला क़दम रखेगा और उस की सख़्त तेज़ी को महसूस करेगा मगर फिर भी दूसरा क़दम उठाने पर मजबूर होगा, लोग तेरे सामने फिसल फिसल कर जहन्नम में गिर रहे होंगे, फ़िरिश्ते लोगों को बड़े बड़े कांटों और लोहे के **आंकड़ों** से खींच खींच कर जहन्नम में झोंक रहे होंगे, तू देख रहा होगा कि वोह लोग रोते चिल्लाते सर के बल जहन्नम में गिरते जा रहे हैं, तू सोच उस वक़्त ख़ौफ़ के मारे तेरी क्या ह़ालत बनी होगी !

जहन्नम में गिरने वालों की चीख़ पुकार

जहन्नम की गहराइयों से आहो बुका और हाए ऊह ! की चीख़ पुकार तेरे कानों में पड़ रही होगी, बे शुमार लोग पुल सिरात़ से फिसल कर जहन्नम में जा पड़ेंगे, तू सोच तो सही अगर तेरा क़दम भी फिसल गया तो तेरा क्या बनेगा ! उस वक़्त की शर्मो नदामत तुझे कुछ फ़ाएदा न देगी, उस वक़्त तेरी हसरत भरी फ़रियाद कुछ इस त़रह़ होगी : "आह ! मैं इसी दिन से डरता था, हाए काश ! मैं अपनी आख़िरत के लिये कुछ आगे भेजता, ऐ काश ! मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बताए हुए रास्ते पर चलता, हाए काश ! मैं फ़ुलां को दोस्त न बनाता, ऐ काश ! मैं मिट्टी हो जाता, ऐ काश ! मैं भूला बिसरा हो जाता, ऐ काश ! मेरी मां ही मुझे न जनती ।" (اِحیاءُ العُلوم ج۵ص۲۸۵ مُلَخّصاً)

काश के न दुन्या में पैदा मैं हुवा होता क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
काश ! ऐसा हो जाता ख़ाक बन के त़यबा की मुस्त़फ़ा के क़दमों से मैं लिपट गया होता
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है
काश के मेरी मां ने ही नहीं जना होता

कौन वहां बे ख़ौफ़ रहेगा

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى मजीद फ़रमाते हैं : क़ियामत के होशरुबा ह़ालात में वोही शख़्स ज़ियादा मह़फ़ूज़ होगा जो दुन्या में इस के मुआ़मले में ज़ियादा फ़िक्र मन्द (या'नी ख़ौफ़ज़दा) रहा करेगा क्यूं कि **अल्लाह** पाक किसी पर दो ख़ौफ़ जम्अ़ नहीं करता लिहाज़ा जो आदमी दुन्या में पुल सिरात़ और क़ियामत के भयानक ह़ालात से डरा वोह आख़िरत में इन से नजात पा लेगा। और ख़ौफ़ से हमारी मुराद औ़रतों वाला (कमज़ोर दिली

वाला) ख़ौफ़ नहीं कि सुनते ही (आ़रिज़ी त़ौर पर) दिल नर्म पड़ जाए और आंसू बहने लगें फिर जल्द ही सब कुछ भूल कर बन्दा लह्वो लइ़ब (या'नी खेलकूद) में मश्ग़ूल हो जाए। **ख़ौफ़** का इस त़रह़ के रोने धोने से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं बल्कि इन्सान जिस चीज़ से डरता है उस से दूर भागता है और जिस चीज़ से रग़बत रखता है उस की त़लब भी करता है, पस आख़िरत में आप को वोही ख़ौफ़ नजात दिलाएगा जो कि **अल्लाह** करीम की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी पर आमादा करे और ना फ़रमानी और गुनाहों से बाज़ रखे।

बे वुक़ूफ़ों वाला ख़ौफ़

नीज़ औ़रतों के (कमज़ोर दिली) वाले ख़ौफ़ से भी बढ़ कर **बे वुक़ूफ़ों वाला ख़ौफ़** है कि जब वोह (क़ियामत के) होलनाक मनाज़िर के बारे में (कोई बयान वग़ैरा) सुनते हैं तो फ़ौरन उन की ज़बान पर इस्तिआ़ज़ा या'नी पनाह मांगने वाले कलिमात जारी हो जाते हैं और वोह कहने लगते हैं : मैं **अल्लाह** पाक की मदद चाहता हूं, **या अल्लाह** पाक ! मुझे बचा ले ! बचा ले ! वग़ैरा, इस के बा वुजूद गुनाहों पर डटे रहते हैं जो इन की हलाकत का बाइ़स हैं, शैत़ान इन के पनाह मांगने पर हंसता है।**(1)** (या'नी येह सब सिर्फ़ जज़्बाती और आ़रिज़ी अल्फ़ाज़ होते हैं, ख़ौफ़े ह़क़ीक़ी की वज्ह से निकले हुए नहीं होते। इन को जज़्बाती और आ़रिज़ी अल्फ़ाज़ इस लिये कहा जा रहा है कि एक त़रफ़ पनाह भी मांग रहे होते हैं मगर दूसरी त़रफ़ गुनाहों पर मिस्ले साबिक़ (या'नी पहले ही की त़रह़) दिलेरी भी मौजूद रहती है, गुनाह को तर्क कर देने का अ़ज़्म नहीं होता। म-सलन बे नमाज़ी है तो बे नमाज़ी और दाढ़ी मुन्डा दाढ़ी मुन्डा ही रहता है, झूटा झूट बोलना तर्क करने

مدینہ

۱؎ اِحیاءُ الْعُلوم ج٥ ص٢٨٦-٢٨٧ مُلَخَّصاً

का अ़ज़्म करता ही नहीं, सूद, रिश्वत, ह़राम कमाई और धोकेबाज़ी का ख़ूगर येह काम छोड़ता ही नहीं, पराई औ़रतों और अम्रदों के साथ बद निगाही करने वाला, फ़िल्म बीनी और गाने बाजों का रस्या अपने गुनाहों से बचने का ह़क़ीक़ी ज़ेह्न बनाता ही नहीं, ग़ैर शर-ई लिबास पहनने वाला, लोगों पर ज़ुल्म करने वाला, ज़ानी, शराबी, मां बाप को सताने वाला, बाल बच्चों को शरीअ़तो सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबियत न देने वाला, बे नमाज़ियों और मॉडर्न दोस्तों की तबाह कुन सोह़बतों में बैठने वाला वग़ैरा वग़ैरा अपने अपने गुनाहों पर ह़स्बे मा'मूल क़ाइम रहता है)

आहिस्ता आहिस्ता नहीं एक दम गुनाहों को छोड़ दे

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बेशक जज़्बात में आ कर आ़रिज़ी त़ौर पर रोना और तौबा करना भी अगर बर बिनाए **इख़्लास** है तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़रूर रंग लाएगा । अपना ज़ेह्न बनाइये कि मैं ने अपने आप को लाज़िमी सुधारना है, अपने गुनाहों को याद कर के नदामत के साथ रो रो कर तौबा व अ़ह्द कीजिये कि अब اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं फुलां फुलां गुनाह नहीं करूंगा । ख़बरदार ! यहां शैत़ान आप को मश्वरा देगा कि जज़्बाती फ़ैसला अच्छा नहीं होता अपनी इस्लाह़ आहिस्ता आहिस्ता करनी चाहिये, एक दम से ही मौलवी मत बन जाना, हाथों हाथ सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र करना मुनासिब नहीं, बस धीरे धीरे कोशिश जारी रख, अभी तो सारी ज़िन्दगी पड़ी है, अभी तो तेरी उ़म्र ही क्या है ! अभी तो तेरी शादी भी नहीं हुई, शादी के बा'द दाढ़ी बढ़ा लेना बल्कि ह़ज के लिये जाना तो मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से दाढ़ी रख कर आना, जब बूढ़ा हो

जाए तो इ़मामा सजा लेना वग़ैरा वग़ैरा। **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़ुदा की क़सम येह शैत़ान का बहुत ही ख़त़रनाक वार है। तौबा में ताख़ीर इन्तिहाई ख़त़रनाक है, हो सकता है मेरी इस बात पर शैत़ान फ़ौरन वस्वसा डालने लगा हो कि मैं तुझे तौबा से कहां रोकता हूं बेशक फ़ौरन और अभी अभी तौबा कर ले।

क़बूलिय्यते तौबा की तीन शराइत़

अरे मेरे भोलेभाले इस्लामी भाइयो ! गालों पर चन्द बार हलकी हलकी चपत मार लेने का नाम तौबा नहीं। तौबा के तीन रुक्न हैं अगर इन में से एक भी रुक्न कम हो तो फिर तौबा क़बूल नहीं होगी। वोह तीन रुक्न येह हैं : (1) ए'तिराफ़े जुर्म (2) नदामत (या'नी किये हुए गुनाह पर शरमिन्दगी) (3) अ़ज़्मे तर्क। या'नी गुनाह छोड़ने का अ़ज़्म, नीज़ अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो उस की तलाफ़ी भी लाज़िम, म-सलन बे नमाज़ी की तौबा उसी वक़्त **सच्ची तौबा** कहलाएगी जब कि रह जाने वाली नमाज़ों की क़ज़ा भी करे। किसी का माल या पैसे छीन या दबा लिये थे तो **तौबा** उसी सूरत में मुकम्मल होगी जब कि उस को लौटाए या उस से मुआ़फ़ करवाए। ख़ाली SORRY कह देना या ऊपरी त़ौर पर मुआ़फ़ी मांग लेना काफ़ी नहीं होता जब तक साहिबे ह़क़ मुआ़फ़ न कर दे, हां अगर साहिबे ह़क़ फ़ौत हो चुका है तो उस के वु-रसा को पैसे लौटाए अगर वु-रसा भी न रहे हों या कुछ मा'लूम ही नहीं कि किस किस के पैसे खा डाले थे तो उतनी रक़म किसी फ़क़ीर या मिस्कीन को ख़ैरात कर दे। **हुक़ूक़ुल इबाद** के इन अह़कामात की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना का रिसाला ''ज़ुल्म का अन्जाम'' पढ़िये।

आहिस्ता आहिस्ता नहीं फ़ौरन इस्लाह़ होनी चाहिये

बहर ह़ाल आहिस्ता आहिस्ता सुधरने का ज़ेह्न बनाए रखना ख़त़रनाक होता है कि मौत सिर्फ़ बूढ़ों, केन्सर या हार्ट के मरीज़ों ही को आती है ऐसा नहीं, रोज़ाना न जाने कितने ही कड्यल जवान ह़ादिसात का शिकार हो कर अचानक मौत के घाट उतर जाते हैं। सैलाब व ज़ल्ज़ले के ज़रीए़ भी **अचानक मौत** आ दबोचती है।

2 लाख 20 हज़ार से ज़ाइद अम्वात

अभी पिछले ही दिनों की बात है, **सोनामी** (समुन्दरी ज़ल्ज़ले) **की येह आफ़त**, जो कि बिल्कुल अचानक ही नाज़िल हुई थी, 20-1-2005 के जंग अख़्बार की ख़बर के मुत़ाबिक़ इस आफ़त से **ग्यारह ममालिक** में मरने वालों की ता'दाद 2 लाख 20 हज़ार से ज़ाइद है, येह ह़ादिसा सरापा इ़ब्रत है, इस ने सारी दुन्या को हिला कर रख दिया मगर आह ! गुनाहों में कमी आने का नहीं सुना गया ! इ़ब्रत की ख़ात़िर ''रोज़नामा जंग'' 20-1-2005 का एक आर्टीकल ह़स्बे ज़रूरत तसर्रुफ़ के साथ पेश करता हूं :

समुन्दरी ज़ल्ज़ले की तबाह कारियां

''इन्डोनेशिया'' के सूबे ''आचे'' का दारुल हुकूमत **बन्दा आचे** ''सोनामी'' या'नी **समुन्दरी ज़ल्ज़ले** से सब से ज़ियादा मुतअस्सिर हुवा। सिर्फ़ इस शह्र में मरने वालों की ता'दाद **एक लाख** से बढ़ चुकी है। ''बन्दा आचे'' में मौजूद सह़ाफ़ी ने इस शह्र की तबाही का आंखों देखा ह़ाल बयान करते हुए बताया कि येह सर सब्ज़ो शादाब, ख़ूब सूरत और ज़िन्दगी से भरपूर शह्र कोई और नहीं 26 दिसम्बर 2004 सि.ई. से पहले का बन्दा आचे है, फिर **सोनामी** (या'नी समुन्दरी ज़ल्ज़ला)

आया और उस ने मिनटों में इस हंसते बसते शह्र को मल्बे का ढेर बना दिया। **सोनामी** अपने साथ न सिर्फ़ इस शह्र की ख़ूब सूरती और शादाबी ले गया बल्कि हज़ारों ख़ानदानों को तबाह और हज़ारों को अधूरा छोड़ गया। एक ग़ैर सरकारी इन्डोनेशी तन्ज़ीम के आ'दादो शुमार के मुत़ाबिक़ साढ़े तीन लाख की आबादी के "बन्दा आचे" की तक़रीबन 60 फ़ीसद आबादी **सोनामी** की भेंट चढ़ चुकी है। इस शह्र में अभी तक जगह जगह लाशें बिखरी पड़ी हैं और रोज़ाना हज़ारों लाशों को इज्तिमाई त़ौर पर दफ़्न किया जा रहा है। जो **सोनामी** से बच गए हैं वोह केम्पों में सिसक्ते हुए अपने बिछड़ने वालों को याद कर रहे हैं। यहां बहुत से अफ़राद ऐसे हैं जो अपना पूरा ख़ानदान खो चुके हैं, उन की आंखों में मौजूद ह़सरत और तलाश शायद कभी ख़त्म नहीं होगी, येह वोह लोग हैं जिन्हों ने अपनी आंखों के सामने अपने प्यारों को मौत के मुंह में जाते देखा, इन के दुख की गहराई का अन्दाज़ा लगाया ही नहीं जा सकता। पहले ज़ल्ज़ले ने शह्र को हिला कर रख दिया और फिर सोनामी ने वोह तबाही मचाई जो इस नस्ल ने दुन्या में कहीं नहीं देखी। कहते हैं, अगर येह त़ूफ़ान दिन के बजाए रात को आता तो जो बच गए हैं शायद वोह भी न बच पाते, **सोनामी** जहां जहां से गुज़रा रास्ते में आने वाली हर चीज़ को तहस नहस करता चला गया और अपने पीछे सिर्फ़ तबाही और मौत छोड़ गया। "बन्दा आचे" के वस्त़ (या'नी दरमियान) में बहने वाला येह पुर सुकून दरिया शिमाल से जनूब की त़रफ़ बहता है लेकिन सोनामी के चिंघाड़ते हुए त़ूफ़ान ने इसे जनूब से शिमाल की सम्त बहने पर मजबूर कर दिया।

येह वाक़िआ़ नया नहीं है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदा की क़सम ! इस ताज़ा तरीन क़िस्से में हमारे लिये इ़ब्रत इ़ब्रत और सरासर इ़ब्रत है, क्या अब भी हम तौबा पर आमादा नहीं होंगे ? बरबादी और वीरानी का येह वाक़िआ़ कोई नया नहीं, ऐसा पहले भी होता रहा है जिस की ख़बर हमें ख़ुद **अल्लाह** पाक की सच्ची किताब दे रही है, अलबत्ता क़ुरआनी वाक़िआ़त और मौजूदा तबाही के वाक़िआ़त में येह फ़र्क़ है कि क़ुरआने करीम में बयान कर्दा वाक़िआ़त में तबाही व बरबादी का अ़ज़ाबे इलाही होना हमें यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम है और मौजूदा वाक़िआ़त में अ़ज़ाब होने या न होने दोनों का एह़तिमाल (या'नी पहलू) है लेकिन इतनी बात तो यक़ीनी है कि जो लोग इन त़ूफ़ानों, सैलाबों में मर गए या मर जाएंगे उन की दुन्या ख़त्म हो गई और आख़िरत का मर्ह़ला शुरूअ़ हो गया नीज़ तौबा व नेकियों की मोहलत भी ख़त्म हो गई लिहाज़ा हमारे लिये इन मौजूदा वाक़िआ़त में भी इ़ब्रत यक़ीनन मौजूद है। चुनान्चे पारह 25 **सूरतुद्दुख़ान** की आयत 25 ता 29 में इर्शादे क़ुरआनी है :

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿۲۵﴾ وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿۲۶﴾ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿۲۷﴾ كَذٰلِكَ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۲۸﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿۲۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेत और उ़म्दा मकानात और ने'मतें जिन में फ़ारिग़ुल बाल थे। हम ने यूंही किया और उन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी गई।

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आप ने ग़ौर फ़रमाया ? उ़म्दा उ़म्दा मकानात बनाने वाले, ख़ुशनुमा बाग़ात सजाने वाले और लह-लहाते खेत लगाने वाले दुन्या से रुख़्सत हो गए और उन के छोड़े हुए असासे का दूसरों को वारिस बना दिया गया, न उन पर ज़मीन रोई न आस्मान, न ही उन्हें मोहलत दी गई, उन के नामो निशान मिटा दिये गए, उन के तज़्किरे ख़त्म हो गए, बस अब वोह हैं और उन के आ'माल । तो येह दुन्या बस इ़ब्रत ही इ़ब्रत है ।

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नुमूने — मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने — जो आबाद थे वोह महल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है
जहां में कहीं शोरे मातम बपा है — कहीं फ़क़्रो फ़ाक़े से आहो बुका है
कहीं शिक्वए जौरो मक्रो दग़ा है — ग़रज़ हर त़रफ़ से येही बस सदा है
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस से पहले कि आप में से किसी के बारे में येह शोर मच जाए कि उस का इन्तिक़ाल हो गया है, जल्दी ग़स्साल को बुला लाओ, चुनान्चे ग़स्साल तख़्ता उठाए चला आ रहा हो, ग़ुस्ल दिया जा रहा हो..... कफ़न पहनाया जा रहा हो..... फिर अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाए । येह सब पेश आने से क़ब्ल ही मान जाइये, जल्दी जल्दी गुनाहों से सच्ची तौबा कर लीजिये । अभी तौबा का वक़्त मौजूद है ।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी — क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

बाग़ का झूला

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मौत की तय्यारी, क़ब्रो ह़श्र और **पुल सिरात़** से गुज़रने की आसानी के ह़ुसूल की तड़प अपने अन्दर पैदा करने के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िलों में रह़मते रब्बे काएनात से सफ़र की सच्ची निय्यत भी नजात का बाइस बन सकती है, चुनान्चे ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक मह़ल्ले में **म-दनी दौरा** बराए नेकी की दा'वत से मुतअस्सिर हो कर एक मॉडर्न नौ जवान मस्जिद में आ गया, सुन्नतों भरे बयान में म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब दिलाई गई तो उस ने **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये नाम लिखवा दिया। म-दनी क़ाफ़िले में उस की रवानगी में अभी कुछ दिन बाक़ी थे कि क़ज़ाए इलाही से उस का इन्तिक़ाल हो गया। किसी अहले ख़ाना ने मर्ह़ूम को ख़्वाब में इस ह़ालत में देखा कि वोह एक हरियाले बाग़ में हश्शाश बश्शाश झूला झूल रहा है। पूछा : यहां कैसे आ गए ? जवाब दिया : **''दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले के साथ आया हूं, अल्लाह करीम का बड़ा करम हुवा है, मेरी मां से कह देना कि वोह मेरा ग़म न करे मैं यहां बहुत चैन से हूं।''**

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
कर लो अब निय्यतें क़ाफ़िले में चलो पाओगे जन्नतें क़ाफ़िले में चलो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है । (ابو یعلی)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! येह सब **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की मशिय्यत पर है कि चाहे तो किसी एक गुनाह पर गिरिफ़्त फ़रमा ले और चाहे तो किसी एक नेकी पर बख़्श दे या अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से या मह़ज़ अपनी रह़मत से बिला ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा दे । चुनान्चे पारह 24 **सूरतुज़्ज़ुमर** की आयत 53 में ख़ुदाए रह़मान का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है **:**

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۵۳﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की, **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद न हो, बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है ।

तू ने जब से सुना दिया या रब ! *سَبَقَت رَحمَتی عَلٰی غَضَبی*
और मज़बूत़ हो गया या रब ! *आसरा हम गुनाहगारों का*

तू ह़सन को उठा ह़सन कर के
हो मआ़ल ख़ैर ख़ातिमा या रब

यह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में
आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

27 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1440 सि.हि.

06-11-2018

''पुल सिरात़ की दहशत'' (केसिट) ने काया पलट दी

क़ुसूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई मुतअ़द्दद **अख़्लाक़ी बुराइयों** में मुब्तला थे । फ़िल्में डिरामे देखना, खेलकूद में वक़्त **बरबाद** करना उन का महबूब मश्ग़ला था । एक मरतबा र-मज़ानुल मुबारक तशरीफ़ लाया तो उन को भी **नमाज़ों** के लिये मस्जिद में ह़ाज़िरी की सआ़दत मिलने लगी । वहां **दा'वते इस्लामी** के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स देते थे । दर्स के बा'द वोह ख़ूब मुस्कुरा कर पुरजोश त़रीक़े से मुलाक़ात किया करते, उन के इस अन्दाज़ से येह बहुत मुतअस्सिर हुए । बिल ख़ुसूस मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी का ''**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो**'' कहना काफ़ी देर तक उन के कानों में रस घोलता रहता । एक दिन वोह उन्हें बड़े पुर तपाक अन्दाज़ में मिले और **दा'वते इस्लामी** के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की, उन्हों ने निय्यत कर ली । जुमे'रात आने से पहले ही उन्हें दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के जारी कर्दा बयान का केसिट ''**पुल सिरात़ की दहशत**'' कहीं से मुयस्सर आ गया । उन्हों ने तवज्जोह से बयान सुनना शुरूअ़ किया । ''पुल सिरात़'' का नाम तो उन्हों ने पहले भी सुन रखा था मगर पुल सिरात़ उ़बूर करने का मर्ह़ला इतना **दहशत नाक** है, इस का पता उन्हें येह बयान सुन कर चला । जब उन्हों ने अपने गुनाहों, फिर **नातुवां या'नी कमज़ोर बदन** की त़रफ़ नज़र की तो उन की आंखों में **आंसू** आ गए और सोचने लगे कि मैं **पुल सिरात़** क्यूंकर पार कर सकूंगा ! चुनान्चे उन्हों ने अपने रब्बे करीम की ना फ़रमानियों से तौबा कर के **सुधरने** का पुख़्ता इरादा कर लिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

की ब-र-कत से सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी शरीफ़, इमामा और सफ़ेद लिबास अब उन के बदन का ह़िस्सा बन चुके हैं। (रिसालए हाज़ा मज़्कूरा केसिट ही का मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा तह़रीरी गुलदस्ता है)

इक़ामत के बा'द इमाम साह़िब यूं ए'लान करें

अपनी एड़ियां, गरदनें और कन्धे एक सीध में कर के सफ़ सीधी कर लीजिये, दो आदमियों के बीच में जगह छोड़ना गुनाह है, कन्धे से कन्धा रगड़ खा रहा हो इस त़रह़ ख़ूब अच्छी त़रह़ मिला कर रखना वाजिब, सफ़ सीधी रखना वाजिब और जब तक अगली सफ़ (दोनों कोनों तक) पूरी न हो जाए जान बूझ कर पीछे नमाज़ शुरूअ़ कर देना तर्के वाजिब, ना जाइज़ व गुनाह है। 15 साल से छोटे ना बालिग़ बच्चों को सफ़ों में खड़ा न रखिये, इन्हें कोने में भी न भेजिये छोटे बच्चों की सफ़ सब से आख़िर में बनाइये। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये देखिये : फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 219 ता 225)

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرانِ پاک		الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	الزھد لابن المبارک	دار الکتب العلمیۃ بیروت
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر بیروت
ابوداؤد	دار احیاء التراث العربی بیروت	البدور السافرۃ	موسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	بحر الدموع	مکتبۃ دار الفجر دمشق
ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	تنبیہ المغترین	دار المعرفۃ بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	التخویف من النار	مکتبۃ دار البیان دمشق
المستدرک	دار المعرفۃ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت	☆☆☆	☆☆☆

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	जन्नत में घर बनवाइये	14
पुल सिरात़ की दहशत (ह़िकायत)	1	कि है رَبِّ سَلِّم सदाए मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	15
पुल सिरात़ तलवार की धार से ज़ियादा तेज़ है	2	नूर से महरूम लोग	15
फिर तेरा येह हंसना कैसा ? (ह़िकायत)	3	तेरे लिये कोई नूर नहीं !	16
ख़ुश होने वाले पर हैरत	3	निगाहे नूर के त़लब गार महरूम भिकारी	16
हर एक पुल सिरात़ से गुज़रेगा	3	ईमान पर ख़ातिमे की गारन्टी किसी के पास नहीं	17
मुजरिम जहन्नम में गिर पड़ेंगे	4	अज़ान के दौरान गुफ़्तगू	18
सह़ाबी का रोना (ह़िकायत)	5	फ़ोन की म्यूज़ीकल ट्यून	18
"وَارِدُهَا" से मुराद	5	एक हज़ार साल के बा'द दोज़ख़ से रिहाई	19
काश के मेरी मां ने ही नहीं जना होता	6	40 साल तक नहीं हंसे	19
पुल सिरात़ पन्दरह हज़ार साल की राह है	6	गिरते पड़ते गुज़रने वाला	20
पुल सिरात़ से ब आसानी कौन गुज़र सकेगा ?	6	मेरा क्या बनेगा !	21
पुल सिरात़ से गुज़रने वालों के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़	7	पुल सिरात़ से गुज़रने का लरज़ा ख़ैज़ तसव्वुर	22
आख़िरत में तंगी का एक सबब	8	जहन्नम में गिरने वालों की चीख़ो पुकार	23
माल ज़ियादा तो वबाल भी ज़ियादा	9	कौन वहां बे ख़ौफ़ रहेगा	23
"भारी बोझ" की ता'रीफ़	9	बे वुक़ूफ़ों वाला ख़ौफ़	24
बोझ ही बोझ	10	आहिस्ता आहिस्ता नहीं एक दम गुनाहों को छोड़ दे	25
मैं अगर जहन्नम में जा गिरा तो !	11	क़बूलिय्यते तौबा की तीन शराइत़	26
रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कीजिये	12	आहिस्ता आहिस्ता नहीं फ़ौरन इस्लाह़ होनी चाहिये	27
नूर वाले मुसल्मान	12	2 लाख 20 हज़ार से ज़ाइद अम्वात	27
नूरे ईमान की शान	13	समुन्दरी ज़ल्ज़ले की तबाह कारियां	27
ह़श्र में नूर दिलाने वाले 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	13	येह वाक़िआ नया नहीं है	29
﴾1﴿ नमाज़ी को नूर मिलेगा	13	जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है	30
﴾2﴿ अंधेरे में मस्जिद को जाने की फ़ज़ीलत	13	कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी	30
﴾3﴿ मुश्किल कुशाई की फ़ज़ीलत	14	बाग़ का झूला	31
﴾4﴿ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه 100 बार पढ़ने की फ़ज़ीलत	14	"पुल सिरात़ की दहशत" (कैसिट) ने काया पलट दी	33
﴾5﴿ बाज़ार में ज़िक्र की फ़ज़ीलत	14	मआख़िज़ो मराजेअ़	34

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **''फ़िक्रे मदीना''** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ'' अपनी इस्लाह़ के लिये **''मदनी इन्आ़मात''** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''मदनी क़ाफ़िलों''** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

M.R.P.
₹ 0

0109061

मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

अह़मदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

देहली :- मक्तबतुल मदीना, 421, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560

मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 60 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

हैदरआबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net